कुरुक्षेत्र

बहुआयामी विकास का उत्प्रेरक ग्रामीण पर्यटन

ग्रामीण पर्यटन

- 'ग्रामीण पर्यटन' का संबंध ग्रामीण इलाकों या ग्रामीण क्षेत्र में पर्यटन से होता है। ग्रामीण पर्यटन के मौलिक स्तर में वह क्षेत्र शामिल होता है जो भूमि उपयोग पैटर्न, क्षेत्र की अर्थव्यवस्था, समुदाय की भागीदारी, क्षेत्र के अबाधित विकास और इसकी पारंपरिक व सांस्कृतिक पहचान से संबंधित है। वैश्विक स्तर पर ग्रामीण पर्यटन की शुरुआत 19oha सदी के प्रारंभ में हुई। 1980 के दशक से विश्व पर्यावरण एवं विकास आयोग की 'आवर कॉमन फ्यूचर' (हमारा साझा भविष्य) पर रिपोर्ट और 2000 में सहस्राब्दी विकास लक्ष्यों को अपनाने के बाद से ग्रामीण पर्यटन को विकसित एवं विकासशील देशों द्वारा ग्रामीण अर्थव्यवस्था के उत्थान व विकास के एक उपकरण के रूप में देखा गया है।
- भारत में ग्रामीण पर्यटन अभी भी शुरुआती चरण में है, जो विशाल पर्यटन उद्योग के भीतर एक विशिष्ट क्षेत्र के रूप में उभर रहा है। ग्रामीण अर्थव्यवस्था के विकास को बढ़ावा देने, रोज़गार के अवसर पैदा करने और आत्मनिर्भर भारत को बढ़ावा देने में ग्रामीण पर्यटन महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। भारत के गाँव देश की समृद्ध संस्कृति, परंपराओं, शिल्प, विरासत और कृषि पद्धतियों के भंडार के रूप में काम करते हैं। पर्यटन के माध्यम से इन स्थानीय तत्त्वों की क्षमता का दोहन न केवल आय उत्पन्न कर सकता है, बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों में रोज़गार के अवसर भी पैदा कर सकता है। यह ग्रामीण क्षेत्रों से संकटपूर्ण प्रवासन को कम करने, गरीबी घटाने और सतत् विकास को बढ़ावा देने में भी योगदान देता है।

क्षमता का एहसास

- भारत में ग्रामीण पर्यटन का पहला उल्लेख दसवीं पंचवर्षीय योजना (2002-2007) में देखा जा सकता है। हालाँकि, इन क्षेत्रों में ढाँचागत विकास कर पर्यटन के नए रूप 'ग्रामीण पर्यटन' को पहली बार ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना (2007-2012) के माध्यम से प्राथमिकता दी गई। बारहवीं पंचवर्षीय योजना (2012-2017) में भारत सरकार चिकित्सा पर्यटन और ग्रामीण पर्यटन जैसे पर्यटन विशिष्ट क्षेत्रों के विकास के लिए अवसरों को अपनाने और रास्ते खोलने की कोशिश करती है।

आगे बढ़ने की रणनीति

- भारत सरकार के पर्यटन मंत्रालय ने भारत में ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देने और विकसित करने के लिए दो रणनीतियाँ तैयार की है। भारत में ग्रामीण पर्यटन के विकास के लिए राष्ट्रीय रणनीति व रोडमैप और भारत में ग्रामीण होमस्टे को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय रणनीति। दोनों रणनीतियाँ भारतीय ग्रामीण पर्यटन की क्षमता का लाभ उठाने के व्यापक दृष्टिकोण के साथ तैयार की गई हैं। ग्रामीण पर्यटन के बहुआयामी लाभ पहुँचाने के लिए रणनीतियाँ कई प्रमुख रणनीतिक स्तंभों पर आधारित हैं:-
  - राज्य की नीतियों और सर्वोत्तम प्रथाओं की बेंचमार्किंग
  - ग्रामीण पर्यटन के लिए डिजिटल प्रौद्योगिकियाँ और प्लेटफॉर्म
  - ग्रामीण पर्यटन के लिए क्लस्टर विकसित करना
  - ग्रामीण पर्यटन के लिए विपणन सहायता
  - हितधारकों का क्षमता-निर्माण
  - सुशासन और संस्थागत ढाँचा

- पर्यटन मंत्रालय ने राष्ट्रीय रणनीतियों के प्रभावी क्रियान्वयन और ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देने तथा विकास के लिए सहायता प्रदान करने हेतु भारतीय पर्यटन एवं यात्रा प्रबंधन संस्थान को ग्रामीण पर्यटन व ग्रामीण होमस्टे के लिए केंद्रीय नोडल एजेंसी के रूप में नामित किया है।

सामुदायिक सशक्तीकरण एवं गरीबी उन्मूलन के लिए ग्रामीण पर्यटन

- पर्यटन उद्योग की कोई सीमा नहीं है। विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाएँ जी-20 के रूप में एकसाथ आईं। अनेक मुद्दों पर चर्चा के बीच ग्रामीण पर्यटन पर विशेष ध्यान देने के साथ कच्छ के रण में पहली पर्यटन कार्यसमूह की बैठक हुई। पहली टी.डब्ल्यू.जी. बैठक का पहला पक्ष गरीबी उन्मूलन हेतु सामुदायिक सशक्तीकरण के लिए ग्रामीण पर्यटन पर था। पर्यटन मंत्रालय पर्यावरण, संस्कृति, परंपरा व अर्थव्यवस्था पर ग्रामीण पर्यटन के प्रभाव को बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित कर रहा है।

भारतीय ग्रामीण पर्यटन को सूचीबद्ध करना

- भारतीय ग्रामीण पर्यटन की क्षमता का पता लगाने के लिए सर्वश्रेष्ठ पर्यटन ग्राम प्रतियोगिता और सर्वश्रेष्ठ ग्रामीण होमस्टे प्रतियोगिता शुरू की गई है। सर्वश्रेष्ठ पर्यटन ग्राम प्रतियोगिता के पहले संस्करण में 31 राज्यों एवं केंद्र शासित प्रदेशों के 315 ज़िलों से कुल 795 गाँवों ने आवेदन दायर किए थे, जिनमें से 35 गाँवों को भारत के सर्वश्रेष्ठ पर्यटन गाँवों के रूप में मान्यता दी गई थी। मान्यता प्राप्त 35 गाँवों का कई दृष्टिकोणों से विश्लेषण किया गया और इन गाँवों से सर्वोत्तम प्रथाओं और मॉडलों को तैयार किया गया।
- ग्रामीण पर्यटन स्थलों की पहचान करने और दुनिया को भारतीय ग्रामीण पर्यटन के बारे में जागरूक करने के लिए ग्रामीण पर्यटन की एक समर्पित वेबसाइट लॉन्च की गई है। वेबसाइट में भारत में ग्रामीण पर्यटन स्थलों, भारत में ग्रामीण होमस्टे, ग्रामीण पर्यटन के लिए सरकार व उद्योग की पहल आदि के बारे में जानकारी है।

ग्रामीण पर्यटन को वैश्विक स्तर पर स्थापित करना

- ग्रामीण पर्यटन विकास को संयुक्त राष्ट्र पर्यटन (पहले UNWTO) से प्राप्त अंतर्राष्ट्रीय प्रशंसा से बल मिला है। तेलंगाना राज्य के पोचमपल्ली गाँव को वर्ष 2021 में यू.एन.डब्ल्यू.टी.ओ. के सर्वश्रेष्ठ पर्यटन गाँव के रूप में मान्यता दी गई है। पोचमपल्ली बुनकरों का एक छोटा-सा गाँव है जो इकत डिज़ाइन से सजे प्रसिद्ध पोचमपल्ली रेशम के लिए जाना जाता है। यह गाँव ग्रामीण पर्यटन और उसके विकास में सामुदायिक भागीदारी के बेहतरीन मॉडलों में से एक को प्रदर्शित करता है।
- वर्ष 2023 में गुजरात राज्य के धोर्डो को यू.एन.डब्ल्यू.टी.ओ. सर्वश्रेष्ठ पर्यटन गाँव के रूप में मान्यता दी गई थी। धोर्डो गाँव व्यापार, रोज़गार सृजन, निवेश, ढाँचागत विकास, सामाजिक समावेशन आदि को प्रभावित करने वाले प्रमुख आर्थिक चालक के रूप में पर्यटन को शामिल करने का आदर्श उदाहरण है। खोनोमा, नागालैंड और मंडला, मध्य प्रदेश को यू.एन. डब्ल्यू.टी.ओ. के उन्नयन कार्यक्रम के तहत पहचान मिली थी।
- इन गाँवों को क्रमश: वर्ष 2022 और 2023 में पहचान मिली। उन्नयन कार्यक्रम के तहत इन गाँवों में सुधार की गुंजाइश के साथ सर्वश्रेष्ठ पर्यटन गाँव बनने की क्षमता की पहचान की गई थी।

आखिरी गाँव से पहले गाँव तक

- भारत का तथाकथित आखिरी गाँव, भारत का पहला गाँव है। इसी दृष्टि से भारत सरकार द्वारा देश के सीमावर्ती गाँवों के लिए वाइब्रेंट विलेज़ कार्यक्रम शुरू किया गया। भारत सरकार ने सीमावर्ती समुदायों के जीवन स्तर को ऊपर उठाने, बुनियादी ढांचे को उन्नत करने, स्वास्थ्य देखभाल एवं शिक्षा तक पहुँच बढ़ाने और आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिए कई विकास कार्यक्रम व प्रयास किए हैं।

- विकास के बुनियादी क्षेत्र हैं- सभी मौसम में चालू सड़कें, पीने का पानी, 24×7 बिजली, सौर व पवन ऊर्जा पर विशेष ध्यान और इंटरनेट कनेक्टिविटी, पर्यटक केंद्र, बहुउद्देशीय केंद्र एवं स्वास्थ्य व कल्याण केंद्र।

सामुदायिक सुदृढ़ीकरण

- ग्रामीण पर्यटन की क्षमता बढ़ाने और स्थायी आजीविका सुनिश्चित करने के लिए भारत सरकार राष्ट्रीय, राज्य एवं क्लस्टर स्तरों पर क्षमता-निर्माण संसाधन केंद्र स्थापित करने का लक्ष्य लेकर चल रही है। विभिन्न स्तरों पर ये क्षमता निर्माण संसाधन केंद्र पर्यटन ज्ञान के भंडार के रूप में काम करेंगे। इस ज्ञान को स्थानीय समुदायों और एम.एस.एम.ई. के लिए मॉड्यूल में तैयार कर क्षेत्रीय उपयोग के लिए प्रासंगिक बनाया जाएगा और उत्तरदायी पर्यटन के लिए मानक विकसित करने के लिए उपयोग किया जाएगा।
- भारत सरकार देश में ग्रामीण पर्यटन के विकास के लिए प्रतियोगिताओं, अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान और रणनीतिक कार्यक्रमों जैसी जीवंत पहलों के माध्यम से राष्ट्रीय व वैश्विक कैनवास पर ग्रामीण पर्यटन की एक आशाजनक छवि चित्रित कर रही है। यह आर्थिक विकास के रास्ते खोलता है, सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करता है और स्थानीय समुदायों को सशक्त बनाता है। ये व्यापक दृष्टिकोण न केवल ग्रामीण भारत की अप्रयुक्त क्षमता को दिखाता है, बल्कि इसे ज़िम्मेदार पर्यटन के लिए एक जीवंत केंद्र के रूप में भी स्थापित करता है जो लचीलेपन व ग्रामीण समुदायों के समग्र कल्याण को बढ़ावा देता है।

प्राकृतिक पर्यटन के लिए ग्रामीण भारत की तैयारी

संदर्भ

- भारत में पर्यटन की वास्तविक संभावना ग्रामीण क्षेत्रों में निहित है। ग्रामीण की अवधारणा खुले क्षेत्रों, छोटी-छोटी बस्तियों, खेतों, प्रकृति की प्रचुरता व लोक संस्कृति से जोड़ती है और यहीं भारत में पर्यटन की संभावनाएँ

मौजूद हैं। इसके विपरीत दृष्टिकोण भारतीय पर्यटन के संदर्भ में सही नहीं बैठेगा। अगर गाँवों में शहरीकरण का अनुकरण कर उन्हें वास्तविक प्रकृति के अनुभव से वंचित कर दिया जाए तो ऐसा क्लोन किया गया भारत निश्चित रूप से पर्यटकों का पसंदीदा पर्यटन स्थल नहीं हो सकता।

- कृत्रिम हस्तक्षेप से बनाए गए फव्वारे, डिस्को लाइट्स आदि का प्रकृति के बीच सैर जैसी सरल चीज़ से कोई मुकाबला नहीं हो सकता। ग्रामीण भारत प्रकृति का संरक्षक है और शहरीकरण का प्रसार उन्हीं संरक्षकों से प्रकृति को लूटना है। ग्रामीण भारत में पर्यटन आर्थिक वरदान है जिसे अभी भी विकसित किया जाना है। इस संदर्भ में अद्वितीय भारतीय पर्यटन को जीवन और जीने का अनुभव देने की संभावनाओं को खोलने की कुंजी प्रकृति की प्राचीन सुंदरता व 'सुविधाकरण' की आवश्यकता है।
- ग्रामीण भारत के पास न केवल घरेलू और शहरी, बल्कि विदेशी पर्यटकों को ऑफर करने के लिए भी अनूठा अनुभव है। भारत में होमस्टे की अवधारणा काफी समय से मौजूद है, लेकिन इसके बावजूद यह अभी भी उस तरीके से नहीं बढ़ पाया है जिससे विस्तार की संभावना बन सके। इसका एक कारण होमस्टे की व्यापक पैकेजिंग की अवधारणा की कमी हो सकती है। उदाहरण के लिए, मूल्यवान पर्यटकों को एक संपूर्ण अनुभव देने के लिए कौशल सेट का स्पष्ट अभाव है। इसके लिए एक आकर्षक पारिस्थितिकी तंत्र बनाने की आवश्यकता है। इसके अलावा, सामाजिक-सांस्कृतिक मुद्दों की जटिलताओं और लैंगिक भूमिकाओं पर भी ध्यान देने की आवश्यकता है। गाँव-आधारित पर्यटन की ऐसी योजनाओं में भाग लेने के लिए सामुदायिक सहभागिता ज़रूरी है।

ग्रामीण पर्यटन की विशेषताएँ

- विश्व पर्यटन संगठन (यू.एन. टूरिज़्म) के अनुसार, ग्रामीण पर्यटन की विशेषताएँ इस प्रकार हैं :

- कम जनसंख्या घनत्व, भूदृश्य व भूमि उपयोग पर कृषि एवं वानिकी का प्रभुत्व और पारंपरिक सामाजिक संरचना तथा जीवनशैली।
- भारतीय संदर्भ में ग्रामीण पर्यटन आकांक्षी ग्रामीण इलाकों में सतत् विकास लाता है। साथ ही, भावी पीढ़ी के लिए सांस्कृतिक पहचान व सामाजिक मूल्यों का संरक्षण करता है। ग्रामीण पर्यटन उद्यमिता-आधारित रोज़गार के द्वार खोलता है और इसलिए शहरी प्रवासन को रोकने के लिए प्रमुख चालक है।
- भूटान में समुदाय-आधारित पर्यटन सतत् पर्यटन की एक बेहतर तरीके से तैयार की गई रणनीति है जिसमें ग्राम पर्यटन भूटानी जीवनशैली का अनुभव प्रदान करता है। परिणामस्वरूप, यह ग्राम समुदायों को आर्थिक व आजीविका लाभ पहुँचाता है। यह रणनीति स्थानीय बिक्री को कवर करती है। गाँव के लोगों द्वारा सीधे कृषि उत्पाद उपलब्ध कराने से उन्हें अतिरिक्त वित्तीय लाभ मिलता है।
- नवोन्मेषी पर्यटन उद्यमी फार्म टूरिज़्म आदि के साथ प्रयोग कर रहे हैं जहाँ लोग वास्तव में खेतों में काम करते हैं और कृषि का अनुभव करते हैं। यह रोमांचक अनुभव होता है जब ऐसे ऑफबीट पर्यटक अपने भोजन के लिए कच्चा माल व सब्जियाँ खेत से प्राप्त करते हैं और यहाँ तक कि पारंपरिक रसोईघर के माहौल में पारंपरिक व्यंजन भी स्वयं पकाते हैं।
- इसका अनुभव करना युवा पीढ़ी के लिए वास्तव में एक बेहतरीन अवसर है। गाँवों में नेचर वॉक एक अप्रयुक्त पर्यटन क्षमता है। एक अन्य नवाचार में 'स्वयंसेवी पर्यटन' भी ग्रामीण पर्यटन का एक महत्त्वपूर्ण रूप है जिसमें पर्यटक ग्रामीण क्षेत्रों का दौरा करते हैं और गाँव में अपने प्रवास का आनंद लेते हुए बच्चों को पढ़ाने, कलाकृतियाँ बनाने या ज्ञानवर्द्धन जैसे बेहतर कृषि के संदर्भ में अपना योगदान देते हैं। बदले में उन्हें जीवन बदल देने वाला सामाजिक जुड़ाव भी मिलता है।

पर्यावरणीय चुनौतियों के लिए रामबाण

- ग्रामीण पर्यटन शायद प्रकृति में रची-बसी जीवनशैली की सततता के अनुभवात्मक प्रचार का सबसे अच्छा तरीका है। यह अब एक सर्वमान्य तथ्य है कि विकास को बनाए रखने के लिए जीवनशैली में बदलाव सबसे महत्त्वपूर्ण पहलू है बशर्ते संसाधनों पर भावी पीढ़ियों के अधिकारों का उल्लंघन न हो।
- दुबई में आयोजित कॉन्फ्रेंस ऑफ पार्टीज (COP) के 28osa सम्मेलन में हिमालय पर्वत शृंखला की कमज़ोर पारिस्थितिकी प्रणालियों में जलवायु परिवर्तन पर ध्यान देने की आवश्यकता बताई गई। अब इस बात पर विचार किया जा रहा है कि यदि वर्तमान शहरीकरण और अन्य विकास पद्धतियाँ इसी तरह निरंतर जारी रही तो 2100 तक हिमालय का 75% भाग अपना हिमावरण खो देगा।
- भारत में हिमालय क्षेत्र के गाँवों में ग्रामीण पर्यटन की अपार संभावनाएँ हैं जो देश के कुल क्षेत्रफल का लगभग 12.56% है। हालाँकि, जलवायु संकट-आधारित विकास प्रतिमान के संदर्भ में यह भौगोलिक क्षेत्र केवल भारत के लिए ही नहीं, बल्कि वैश्विक दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण है।
- ग्रामीण पर्यटन को नेशनल मिशन फॉर सस्टेनिंग द हिमालयन इकोसिस्टम (NMSHE) नीति के साथ एकीकृत करना आवश्यक है। भारत द्वारा COP 28 में 'ग्रीन क्रेडिट प्रोग्राम' प्रस्तुत किया गया। 'ग्रीन क्रेडिट प्रोग्राम' का उद्देश्य वृक्षारोपण, जल संचयन और ऐसी अन्य प्रथाओं को बढ़ावा देकर वित्तीय लाभांश लाना है। भारत लंबे समय तक निम्न कार्बन विकास को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध है और वर्ष 2070 तक नेट-शून्य तक पहुँचने का लक्ष्य रखा गया है। सामाजिक-आर्थिक और पारिस्थितिकीय विचार के अनुरूप वन और वनस्पति आवरण को बढ़ाना निम्न कार्बन विकास रणनीतियों में शामिल है।

सुविधाकरण

- ग्रामीण समुदाय में ग्रामीण पर्यटन को लेकर उद्यमिता की दृष्टि से और पर्यटकों के आगमन की संभावनाओं को लेकर संशय बना हुआ है। भारतीय गाँवों में सक्षम सुविधाएँ प्रदान करने की आवश्यकता को मान्यता नहीं दी गई है, जो पर्यटकों की घटती रुचि का कारण है। एक सक्षम वातावरण बनाने की प्रक्रिया, जिसे अब तक 'सुविधाकरण' के रूप में संदर्भित किया जाता है, मात्र नीतिगत हस्तक्षेप न होकर एक बहुहितधारक जुड़ाव है।
- 'सुविधा' मूर्त एवं सूचनात्मक पहुँच दोनों हो सकती है। इसको तीन समूहों में वर्गीकृत किया गया है। इनका विवरण आगे दिया जा रहा है-

सकारात्मक सुविधाएँ

- इन सकारात्मक सुविधाओं के अभाव में ग्रामीण पर्यटन में रुचि पैदा करने का विचार ही विफल हो जाएगा। सकारात्मक सुविधाओं में शामिल हैं-
- गाँव मुख्य शहर से काफी दूर होते हैं, इसलिए वहाँ स्वास्थ्य देखभाल तक विश्वसनीय पहुँच होनी बहुत ज़रूरी है; विशेष रूप से आपातकालीन सहायता उचित समय के भीतर मिलनी अत्यावश्यक है।
- स्वच्छता एवं प्रभावी अपशिष्ट प्रबंधन का अभाव एक प्रमुख अवरोधक है। एक छोटी-सी ग्राम स्तर की सेटिंग में इस चुनौती से पार पाना काफी आसान है।
- सुरक्षित पेयजल का आश्वासन यह सुनिश्चित करने के लिए महत्त्वपूर्ण है कि आगंतुक बीमार न पड़ें।
- विश्वसनीय बिजली होने के अलावा यह महत्त्वपूर्ण है कि शोर मचने वाले जेनेरेटरों का सहारा न लिया जाए। सौर पैनलों का उपयोग कर हरित ऊर्जा के प्रति प्रतिबद्धता पर्यावरण जागरूकता की एक बेहतरीन मिसाल है।

- स्ट्रीट लाइटिंग का प्रबंध होना चाहिए, यह उन लोगों की सुरक्षा के लिए सबसे आवश्यक है जो उक्त परिवेश से परिचित नहीं हैं। किसी भी तरह सूर्यास्त के बाद कमरे में ही सीमित रहना एक बेहतर विचार नहीं हो सकता।
- सुरक्षा आवश्यकताओं के लिए स्मार्ट समाधानों के माध्यम से बाहरी रिमोट सहायता से जुड़ाव आवश्यक है।

सहायक सुविधाएँ

- पर्यटक-अनुकूल वातावरण बनाने के लिए बुनियादी सहायक सुविधाएँ आवश्यक होंगी, जिसमें शामिल होगा-
- **डिजिटल सेवाएँ :** मोबाइल कनेक्टिविटी से परे डिजिटल सेवाओं तक पहुँच जुड़े रहने की एक सुविधा है अन्यथा कैरियर के प्रति संवेदनशील आबादी के लिए व्यवधान की आशंका हो सकती है।
- **यात्रा कनेक्टिविटी :** यदि यात्रा कनेक्टिविटी उपलब्ध हो तो दूरस्थ स्थान को प्राथमिकता देना एक आकर्षक विकल्प है।
- **प्रतिबंधात्मक प्रथाओं का स्पष्टीकरण :** पर्यटकों को स्थानीय समुदायों की संवेदनशीलता के बारे में जागरूक कर पर्यटकों के साथ अनुकूलता बढ़ाई जा सकती है। प्रतिबंधात्मक प्रथाओं को सामने लाना एक महत्त्वपूर्ण उत्प्रेरक है।
- **सुविधाओं तक पहुँच :** बुनियादी कन्फेक्शनरी, किराना, पैकेज्ड भोजन, बेकरी व बैंक ए.टी.एम. से सामान आपूर्ति को जमा करने के बोझ से काफी राहत मिलती है।

मूल्यवर्द्धन सुविधाएँ

- मूल्यवर्द्धन सुविधाएँ प्रदान करना आवश्यक है। यह लोक संस्कृति का एक उन्नत अनुभव देंगी जो कि ग्रामीण पर्यटन का अद्वितीय विक्रय प्रस्ताव (USP) है। इनमें शामिल हैं-

- **डिजिटल कौशल सेट :** पर्यटक एवं गाँव के मेज़बान के बीच इंटरफेस डिजिटल प्रौद्योगिकी के ज़रिए होता है जिसके लिए गाँवों में डिजिटल साक्षरता बढ़ाना ज़रूरी है। ग्रामीण समुदायों की सोशल मीडिया संलग्नताएँ, होमस्टे और घर-आधारित स्थानीय उपज की ई-मार्केटिंग आदि को संभालने के लिए गाँवों में डिजिटल साक्षरता को बढ़ाने की आवश्यकता है।
- **आतिथ्य कौशल सेट :** मेज़बान समुदायों को अतिथियों के साथ पेशेवर व्यवहार सीखने के लिए आतिथ्य कौशल में प्रशिक्षण प्राप्त करने की आवश्यकता है। 'हुनर से रोज़गार तक' और प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना (PMKVY) पहल जैसी योजनाओं के माध्यम से क्षमता-निर्माण के लिए कई कौशल गतिविधियाँ सीखी जा सकती है।
- **ग्राम कुटीर उद्यम :** स्थानीय कला, शिल्प, व्यंजन, अचार, कल्याण कार्यक्रम और ट्रैकिंग जैसी बाहरी गतिविधियों की सुविधाएँ घर-आधारित मूल्यवर्द्धित उद्यम हैं, ऐसे उद्यम न केवल पर्यटकों को बेहतर यादगार अनुभव देते हैं, बल्कि ग्रामीण समुदाय के लिए भी बिना किसी ऊपरी खर्च के अतिरिक्त आमदनी का ज़रिया बनते हैं।
- **स्थानीय समुदाय से जुड़ना :** स्वयंसेवी पर्यटकों को लक्षित कर संगठित स्थानीय सामुदायिक समूहों से जुड़ना काफी प्रेरक है। इससे संस्कृतियों और जीवनशैलियों का अनोखा अनुभव प्रदान करने में मदद मिलती है।

निष्कर्ष

- संक्षेप में ग्रामीण पर्यटन के ज़रिए गाँवों में परिवर्तन लाने की विशाल क्षमता है। भारत सरकार ने ग्रामीण पर्यटन से संबद्ध विभिन्न योजनाओं का अभिसरण कर इस दिशा में कुछ ठोस प्रयास किए हैं। अब ग्रामीण पर्यटन के माध्यम से गाँवों के विकास हेतु अन्य हितधारकों को भी अपने प्रयासों में तालमेल बिठाने और सतत् योगदान देने के लिए आगे आने की आवश्यकता है।

पर्यटन के माध्यम से तैयार होगा ग्रामीण सांस्कृतिक पथ

संदर्भ

- काशी व कांचीपुरम की प्राचीन उत्कृष्ट हथकरघा बुनाई से लेकर गाँव के चौराहों पर गूंजने वाले जीवंत लोक संगीत तक ग्रामीण सांस्कृतिक पथ के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। एकीकृत दृष्टिकोण के साथ विकसित सांस्कृतिक पर्यटन पथ को प्रभावी प्रचार के ज़रिए व्यापक अवसर के क्षेत्र में परिवर्तित किया जा सकता है।

सांस्कृतिक पर्यटन पथों का बहुआयामी महत्त्व

- ग्रामीण सांस्कृतिक पथ आगंतुकों में स्थानीय शिल्प, पारंपरिक कला रूपों, विरासत स्थलों व गहन सांस्कृतिक अनुभवों से लोगों के जीवन में नई ऊर्जा का संचार करते हैं। ग्रामीण समुदायों के लिए इन पगडंडियों का बहुआयामी महत्त्व है। आर्थिक रूप से यह नई आजीविकाएँ सृजित करते हैं। इससे स्थानीय कारीगरों को आर्थिक व सामाजिक उत्थान का ज़रिया मिलता है। ये सामाजिक रूप से सांस्कृतिक विरासत एवं परंपराओं को संरक्षित करके सामुदायिक गौरव की भावना पैदा करते हैं।
- एक सफल सांस्कृतिक पथ का निर्माण केवल कुछ स्थलों को पर्यटन मानचित्र पर जोड़ने से कहीं अधिक होता है। इसके लिए किसी क्षेत्र की अद्वितीय सांस्कृतिक संपत्तियों की गहरी समझ और एक सम्मोहक कथा निर्माण की आवश्यकता होती है।

भौतिक एवं अमूर्त विरासत का साझा पर्यटन स्थल

- पर्यटन पथ में भौतिक रूप में और प्रथाओं के रूप में मौजूद दोनों ही सांस्कृतिक संपत्तियाँ शामिल होनी चाहिए। किसी भी जगह के ऐतिहासिक स्मारक, मंदिर व पारंपरिक गाँव की वास्तुकला अतीत की झलक पेश करती हैं।

अमूर्त विरासत पीढ़ियों से चली आ रही सांस्कृतिक अनुभूति को व्यक्त करती है। कच्छ में मास्टर बुनकरों के कौशल, केरल में थेबयम प्रदर्शन की स्पंदित लय या सदियों पुरानी आयुर्वेदिक चिकित्सकों का ज्ञान।

- प्राकृतिक परिदृश्य में पवित्र उपवन, झरने या कृषि पद्धतियाँ स्थानीय परंपराओं के साथ गहराई से जुड़ी हुई हैं। प्राचीन किंवदंतियों को दोहराने वाले लयबद्ध नृत्यों व नाटकों से लेकर विरासत में मिले लोकगीतों की भावपूर्ण धुनों तक के कला रूप किसी क्षेत्र की पहचान में महत्त्वपूर्ण हैं। लोकनृत्य, संगीत, नाटक व कठपुतली सांस्कृतिक विरासत को जीवंत बनाते हैं।

सांस्कृतिक पर्यटन पथ में विविधता

- सांस्कृतिक पर्यटन पथ में जीवन के विभिन्न लोक रंग समाहित होते हैं। यह किसी विशिष्ट शिल्प के इतिहास, स्थानीय त्योहार के विकास या लोगों और उनकी भूमि के बीच जटिल संबंध को व्यक्त करता है।
- उदाहरण के लिए, मध्य प्रदेश में लिविंग ट्रेडिशन चंदेरी आगंतुकों को चंदेरी बुनाई के इतिहास और तकनीकों की यात्रा पर ले जा सकता है। बंगाल, झारखंड एवं ओडिशा में छाऊ नृत्य के शक्तिशाली रूप दैनिक जीवन के साथ-साथ पौराणिक आख्यानों एवं महाकाव्यों के जीवन की कहानियाँ भी बताते हैं।

सम्मानजनक अन्वेषण

- ग्रामीण कला आम आदमी की कच्ची जीवनशैली से उभरी है और ज़रूरी नहीं कि इसका उद्देश्य प्रोसेनियम सेटिंग हो; इस प्रकार प्रारंभिक निर्णय यह हो सकता है कि मंचित प्रदर्शन या अप्रामाणिक अनुभवों से संभवत: बचा जाना चाहिए।

- पर्यटक स्थानीय समुदायों और उनके जीवन के तरीकों के साथ वास्तविक जुड़ाव चाहते हैं। पथ को किसी स्थानीय उत्सव के साथ मेल खाने के लिए डिज़ाइन किया जा सकता है। समुदाय के सदस्यों को योजना, प्रबंधन व पथ से प्राप्त लाभों में सक्रिय रूप से शामिल होना चाहिए।
- इससे कलाकारों, स्थानीय शिल्पकारों एवं पर्यटन उद्योग से जुड़ी प्रतिभाओं की सहभागिता सुनिश्चित होती है। अंतत: वह पर्यटन राजस्व के प्राथमिक लाभार्थी के रूप में उभरते हैं। एक सफल सांस्कृतिक पथ के मूल में संधारणीयता होनी चाहिए अर्थात् पर्यटन को इस तरह से प्रबंधित करना है जिससे प्राकृतिक पर्यावरण के साथ-साथ समुदाय के सांस्कृतिक ताने-बाने की भी रक्षा हो सके।

पर्यटन के स्पष्ट दायरे से परे सोचना

- इसमें कम-ज्ञात आकर्षणों व स्थलों की संभावनाओं को पहचानना और उनका दोहन करना शामिल है, जो पर्यटक पहल पर विचार करते समय तुरंत दिमाग में नहीं आते हैं। ऐसा ही एक उदाहरण प्रकाशस्तंभ है, जो किसी क्षेत्र के समग्र पर्यटन परिदृश्य में योगदान करते हुए पर्यटकों के लिए अद्वितीय और सम्मोहक अनुभव प्रदान कर सकता है। पारंपरिक रूप से जहाज़ों का मार्गदर्शन करने और समुद्री सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए बनाए गए प्रकाशस्तंभ ऐतिहासिक, स्थापत्य व सांस्कृतिक महत्त्व रखते हैं। हाल के वर्षों में कई देशों ने इन संरचनाओं की पर्यटन क्षमता को पहचानना शुरू कर दिया है और लाइटहाउस पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए पहल विकसित की है।
- इसी तरह, भारत में अपनी विशाल तटरेखा और समृद्ध समुद्री इतिहास के साथ प्रकाशस्तंभ पर्यटन के महत्त्वपूर्ण अवसर प्रदान करते हैं। लाइटहाउस पर्यटन को बढ़ावा देकर अधिकारी समुद्री विरासत, वास्तुकला एवं तटीय

परिदृश्य में रुचि रखने वाले आगंतुकों को आकर्षित कर सकते हैं। अरब सागर और बंगाल की खाड़ी के साथ भारत का तट प्रकाशस्तंभों से भरा हुआ है जो न केवल नौवहन सहायता के रूप में काम करते हैं, बल्कि ऐतिहासिक व स्थापत्य महत्त्व भी रखते हैं।

औद्योगिक विरासत स्थल

- पूर्व औद्योगिक स्थल, जैसे- पुराने कारखाने, खदानें व गोदाम, किसी क्षेत्र के औद्योगिक इतिहास में अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकते हैं। विरासत एवं औद्योगिक पुरातत्त्व में रुचि रखने वाले पर्यटकों को ये स्थल दिलचस्प लग सकते हैं। भारत में समृद्ध औद्योगिक विरासत वाले कई क्षेत्र हैं जिन्हें पर्यटन के लिए विकसित किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, जर्मनी में रूर क्षेत्र ने अपनी पूर्व कोयला खदानों और इस्पात संयंत्रों को सांस्कृतिक आकर्षणों में बदल दिया।
- इसी तरह, इस्पात उद्योग के लिए प्रसिद्ध झारखंड में जमशेदपुर और भारत के सबसे पुराने कोयला खनन क्षेत्रों में से एक पश्चिम बंगाल में रानीगंज जैसे क्षेत्र औद्योगिक विरासत पर्यटन पहल विकसित कर सकते हैं।

कृषि पर्यटन

- कृषि परिदृश्य एवं कृषि परंपराओं वाले ग्रामीण क्षेत्र पर्यटकों के लिए प्रामाणिक व गहन अनुभव प्रदान कर सकते हैं। फॉर्म स्टे, कृषि पर्यटन व फसल उत्सव जैसी गतिविधियाँ पर्यटकों को खेती के तरीकों के बारे में जानने, स्थानीय किसानों के साथ संवाद करने और खेत की ताज़ा उपज का आनंद लेने की अनुमति देती हैं। यह इको-टूरिज़्म को भी नया आयाम प्रदान करेगा।
- भारत के ग्रामीण क्षेत्रों, विशेष रूप से पंजाब, महाराष्ट्र व कर्नाटक जैसे राज्यों में जीवंत कृषि परिदृश्य और कृषि परंपराएँ हैं। ये क्षेत्र फार्म स्टे, कृषि पर्यटन अनुभव और फार्म-टू-टेबल डाइनिंग अनुभव प्रदान करके कृषि पर्यटन को बढ़ावा दे सकते हैं।

डार्क-स्काई पर्यटन

- न्यूनतम प्रकाश प्रदूषण वाले क्षेत्र तारा-दर्शन और खगोल विज्ञान पर्यटन के लिए आदर्श हैं। डार्क-स्काई रिज़र्व और वेधशालाएँ आगंतुकों को खगोलीय घटनाओं को देखने, खगोल विज्ञान के बारे में जानने और रात में आकाश की सुंदरता का अनुभव करने का अवसर प्रदान करती हैं। इंटरनेशनल डार्क-स्काई एसोसिएशन दुनिया भर में डार्क-स्काई स्थानों को नामित करता है, जैसे कि-आयरलैंड में केरी इंटरनेशनल डार्क-स्काई रिज़र्व।
- भारत में कई ग्रामीण क्षेत्रों में न्यूनतम प्रकाश प्रदूषण है, जो उन्हें अंधेरे आकाश पर्यटन के लिए आदर्श बनाता है। उदाहरण के लिए, लद्दाख, हिमाचल प्रदेश में स्पीति घाटी और ग्रामीण राजस्थान के कुछ हिस्से तारा-दर्शन और खगोल विज्ञान पर्यटन के लिए उत्कृष्ट अवसर प्रदान करते हैं।

सामुदायिक भागीदारी से ग्रामीण पर्यटन बनेगा समावेशी

- सामुदायिक भागीदारी स्थानीय मूल्यों और ज़रूरतों के साथ तालमेल सुनिश्चित करती है। यह स्वामित्व व ज़िम्मेदारी को बढ़ावा देती है। सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण परंपराओं को पुनर्जीवित करने और कारीगरों को समर्थन देने की कुंजी है।
- पर्यावरण संरक्षण का अभिन्न अंग ग्रामीण परिदृश्य और जैव-विविधता की सुरक्षा के लिए ज़िम्मेदार प्रथाओं को बढ़ावा देना है। क्षमता-निर्माण स्थानीय लोगों को रोज़गार और उद्यमिता के लिए कौशल प्रदान करता है। सांस्कृतिक आदान-प्रदान आपसी समझ और सम्मान को बढ़ावा देता है, जिससे पर्यटक व मेज़बान दोनों समृद्ध होते हैं।
- दीर्घकालिक स्थिरता के लिए व्यापक योजना, हितधारक सहयोग और प्रभावों की निगरानी की आवश्यकता होती है। स्थायी ग्रामीण पर्यटन को

लागू करने में सामुदायिक भागीदारी, स्थानीय मूल्यों के साथ संरेखण सुनिश्चित करना और स्वामित्व की भावना को बढ़ावा देना आवश्यक है। सांस्कृतिक संरक्षण पहल, जैसे- विरासत संरक्षण परियोजनाएँ और सांस्कृतिक त्योहार, स्थानीय परंपराओं को बढ़ावा देने के साथ-साथ पर्यटकों के अनुभवों को समृद्ध करते हैं।

निष्कर्ष

- इन रणनीतियों को अपनाने से ग्रामीण पर्यटन सकारात्मक बदलाव, संस्कृति के संरक्षण, समुदायों का समर्थन और पर्यावरण के संरक्षण के लिए उत्प्रेरक बन जाता है। निरंतर सहयोग एवं स्थिरता के लिए प्रतिबद्धता के माध्यम से ग्रामीण गंतव्य आगे बढ़ सकते हैं। यह पर्यटकों को प्रामाणिक अनुभव प्रदान करते हैं। यह आगंतुकों व स्थानीय निवासियों दोनों के हित में है।